माइक्रोफाइनेंस (MICRO-FINANCE)

माइक्रोफाइनेंस- जिसे माइक्रोक्रिडिट भी कहा जाता है - छोटे व्यवसाय के मालिकों और उद्यमियों को पूंजी तक पहुंच प्रदान करने का एक तरीका है। अक्सर ये छोटे और व्यक्तिगत व्यवसाय प्रमुख संस्थानों से पारंपरिक वित्तीय संसाधनों तक पहुंच नहीं रखते हैं। इसका मतलब है कि ऋण, बीमा, और निवेश तक पहुंचना कठिन है जो उनके व्यवसाय को बढ़ाने में मदद करेगा। अनिवार्य रूप से, माइक्रोफाइनेंस ऋण, क्रेडिट, बचत खातों तक पहुंच प्रदान करता है - यहां तक कि बीमा पॉलिसियों और धन हस्तांतरण-छोटे व्यवसाय के मालिक और उद्यमी के लिए। विकासशील दुनिया में ऐसे कई उद्यम हैं।

माइक्रोफाइनेंस का <u>अर्थ</u>

माइक्रोफाइनेंस बैंकिंग सेवाओं का समूह है, जो अपेक्षाकृत कम मौद्रिक राशियों का है, जिसे विशेष रूप से बेरोजगार या कम आय वाले लोगों की बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

दूसरे शब्दों में, माइक्रोफाइनेंस वित्तीय सेवाओं की व्यवस्था है जिसमें निम्न आय वर्ग या गरीब उद्यमियों को दिए जाने वाले ऋण, बचत, बीमा, धन हस्तांतरण और प्रेषण शामिल हैं, जो अन्यथा मानक बैंकिंग सेवाओं का लाभ नहीं उठा सकते हैं। माइक्रोफाइनेंस के पीछे का मकसद गरीबी में लोगों को आत्मनिर्भर बनने के लिए विशेषाधिकार प्रदान करना है, जो उन्हें काफी कम मौद्रिक मात्रा में महत्वपूर्ण बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं।

अधिकांश बार माइक्रोएलों को सूक्ष्म या छोटे उद्यमों के विकास के लिए दिया जाता है जिनके पास कोई कोलाटर नहीं होता है जिसके खिलाफ मानक ऋण उठाया जा सकता है। उधारकर्ता को उधार ली गई राशि पर ब्याज का भुगतान करना आवश्यक है, लेकिन ब्याज दर न्यूनतम है। इसके अलावा, माइक्रोएलान उन लोगों को दिए जाते हैं जो विकासशील देशों

में रहते हैं और जो विभिन्न व्यवसायों जैसे कि बढ़ईगीरी, मछली पकड़ने और परिवहन में काम कर रहे हैं।

माइक्रोफाइनेंस की विशेषताएं

- **यह ग्रामीण वित्त का एक अनिवार्य हिस्सा है।**
- **यह छोटे ऋणों में काम करता है।**
- **यह मूल रूप से गरीब घरों में पूरा होता है।**
- **यह सबसे प्रभावी और वारंटेड गरीबी उन्मूलन रणनीतियों में से एक**
- **यह इलेक्ट्रॉनिक गतिविधि में महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करता है।**
- **यह स्वरोजगार के अवसरों को हड़पने के लिए एक प्रोत्साहन प्रदान करता है।**
- **यह अधिक सेवा उन्मुख और कम लाभ उन्मुख है।**
- **यह छोटे उद्यमी और उत्पादकों की सहायता के लिए है।**
- **गरीब उधारकर्ता ऋण की चुकौती में शायद ही कभी चूककर्ता होते हैं क्योंकि वे सरल और ईश्वरवादी होते हैं। माइक्रोफाइनेंस सेवाओं की एक विस्तृत श्रेणी है, जिसमें माइक्रोक्रिडिट शामिल है। माइक्रोक्रेडिट गरीब ग्राहकों को ऋण सेवाओं का प्रावधान है। माइक्रो क्रेडिट और माइक्रो-फाइनेंस दोनों अलग-अलग हैं। माइक्रो क्रेडिट एक छोटी राशि है, जिसे बैंक या किसी कानूनी रूप से पंजीकृत संस्था द्वारा ऋण के रूप में दिया जाता है, जबकि, माइक्रो-फाइनेंस में गरीब लोगों के लिए ऋण, बचत, बीमा, स्थानांतरण सेवाएं, माइक्रो क्रेडिट ऋण आदि जैसी कई सेवाएँ शामिल हैं।**

माइक्रोफाइनेंसिंग कैसे काम करता है

नोबेल-पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस द्वारा प्रवर्तित माइक्रोफाइनेंस, आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वालों को व्यापार शुरू करने और वित्तीय स्वतंत्रता की दिशा में काम करने में मदद करता है। ये ऋण महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन्हें दिया जाता है भले ही उधारकर्ता के पास

कोई संपार्श्विक न हो। हालांकि, डिफ़ॉल्ट के जोखिम के कारण इन माइक्रोलों के लिए ब्याज दर अक्सर बहुत अधिक होती है।

माइक्रोफाइनांस शब्द में माइक्रोएलॉन, माइक्रो-बचत और माइक्रोइंसुरेंस शामिल हैं। माइक्रोफाइनेंस संस्थान व्यवसाय मालिकों और उद्यमियों को छोटे ऋण और अन्य संसाधन प्रदान करते हैं ताकि उन्हें अपने व्यवसायों को जमीन से दूर करने में मदद मिल सके। प्राप्तकर्ताओं में से कई विकासशील देशों में हैं, और अन्यथा पारंपरिक ऋण प्राप्त नहीं कर सकते हैं। माइक्रो-बचत खाते भी माइक्रोफाइनेंस छतरी के नीचे हैं। वे उद्यमियों को न्यूनतम शेष राशि के साथ बचत खाता रखने की अनुमति देते हैं। और micro-insurance इन उधारकर्ताओं को कम दर पर और कम प्रीमियम के साथ बीमा प्रदान करता है।

भारत में माइक्रोफाइनेंस महत्वपूर्ण क्यों है?

माइक्रोफाइनेंस महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वित्तीय रूप से अनारक्षितों को पूंजी और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है, जैसे कि वे जो चेकिंग खातों, क्रेडिट की लाइनों, या पारंपरिक बैंकों से ऋण प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

माइक्रोफाइनेंस के बिना, इन समूहों को अत्यधिक उच्च-ब्याज दरों के साथ ऋण या payday **अग्रिम का उपयोग करना पड़ सकता है या यहां तक कि परिवार और दोस्तों से पैसा उधार लेना पड़ सकता है। माइक्रोफाइनेंस उन्हें अपने व्यवसायों में निवेश करने में मदद करता है, और परिणामस्वरूप, खुद में निवेश करता है।**

विश्व बैंक द्वारा किए गए शोध के अनुसार, भारत दुनिया के लगभग एक तिहाई गरीबों (एक डॉलर के बराबर एक दिन में जीवित रहने) का घर है। हालांकि कई केंद्र सरकार और राज्य सरकार गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम वर्तमान में भारत में सक्रिय हैं, लेकिन माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेशन में एक प्रमुख योगदानकर्ता है। पिछले कुछ दशकों में इसने गरीबी उन्मूलन में उल्लेखनीय मदद की है। रिपोर्टों से पता चलता है कि जिन लोगों ने

माइक्रोफाइनेंस लिया है, वे अपनी आय बढ़ाने में सक्षम हैं और इसलिए जीवन स्तर। इस प्रकार माइक्रोफाइनेंस निम्नलिखित तरीकों से भारतीय अर्थव्यवस्था के उत्थान में एक प्रमुख भूमिका निभाता है:

1. **क्रेडिट टू रूरल पुअर (Credit to Rural Poor) : सामान्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र अपनी वित्तीय आवश्यकताओं के लिए गैर-संस्थागत एजेंसियों पर निर्भर करता है। सूक्ष्म वित्तपोषण गरीबों के दरवाजे तक संस्थागत ऋण लेने में सफल रहा है और उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाया है।**
2. **गरीबी उन्मूलन (Poverty Alleviation) : सूक्ष्म वित्त के कारण गरीब लोगों को रोजगार मिलता है। यह उन्हें अपने उद्यमशीलता कौशल में सुधार करने और व्यावसायिक अवसरों का फायदा उठाने के लिए प्रोत्साहित करने में भी मदद करता है। रोजगार से आय का स्तर बढ़ता है जो बदले में गरीबी को कम करता है।**
3. **महिला सशक्तिकरण (Women Empowerment) : आम तौर पर** 50% **से अधिक स्वयं सहायता समूह महिलाओं द्वारा गठित किए जाते हैं। अब उनके पास वित्तीय और आर्थिक संसाधनों तक अधिक पहुंच है। यह महिलाओं के लिए अधिक सुरक्षा की दिशा में एक कदम है। इस प्रकार माइक्रोफाइनेंस गरीब महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाता है।**
4. **आर्थिक विकास (Economic Growth) : स्थायी आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में वित्त प्रमुख भूमिका निभाता है। माइक्रोफाइनेंस के कारण, वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बढ़ता है जो जीडीपी को बढ़ाता है और देश की आर्थिक वृद्धि में योगदान देता है।**
5. **बचत का जुटाव (Mobilization of Saving) : माइक्रोफाइनेंस से लोगों में बचत की आदतें विकसित होती हैं। अब अल्प आय वाले गरीब लोग भी बचत कर सकते हैं और बैंक योग्य हैं। बैंकों से प्राप्त बचत और माइक्रो क्रेडिट के माध्यम से उत्पन्न**

वित्तीय संसाधनों का उपयोग अपने सदस्यों को ऋण और अग्रिम प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार माइक्रोफाइनेंस बचत को जुटाने में मदद करता है।

6. **कौशल का विकास (Development of Skills) : माइक्रो वित्तपोषण संभावित ग्रामीण उद्यमियों के लिए एक वरदान रहा है।** SHG **अपने सदस्यों को संयुक्त रूप से या व्यक्तिगत रूप से व्यावसायिक इकाइयों की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे सहायक संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और नेतृत्व गुण सीखते हैं। इस प्रकार माइक्रो फाइनेंस अप्रत्यक्ष रूप से कौशल विकास के लिए जिम्मेदार है।**
7. **आपसी मदद और सहयोग (Mutual Help and Co-operation) : माइक्रोफाइनेंस सदस्यों के बीच आपसी मदद और सहयोग को बढ़ावा देता है। समूह का सामूहिक प्रयास आर्थिक हित को बढ़ावा देता है और सामाजिक आर्थिक संक्रमण को प्राप्त करने में मदद करता है।**
8. **समाज कल्याण (Social Welfare)** : **रोजगार सृजन के साथ लोगों की आय का स्तर बढ़ता है। वे बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण आदि के लिए जा सकते हैं। इस प्रकार सूक्ष्म वित्त से समाज कल्याण या समाज की बेहतरी होती है।**